भगवान महावीर २६०० वा जन्म कल्याणक महोत्सव विशेषांक

विश्व रक्षक

राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

VISHWA RAKSHAK National Hindi Weekly

वर्ष : 3 अंक : 4 05-11 अप्रेल 2001 पृष्ठ : 10 मूल्य : 2 रु.

हार्दिक शुभकामनाएँ

श्री कल्याण ज्योतिष्यालय

२०-३-६५५ लाल हवेली, हुसैनी आलम रोड, हैदराबाद-५००००२

फोन ४५७१३१२

पं. नीतीदेवजी शास्त्री

ज्योतिष एवं वास्तु विशेषज्ञ

कैंसर के इलाज में करिश्माई कामयाबी

भारतीय जड़ी-बूटियां कैंसर जैसे जानलेवा रोग से निपटने में सक्षम है। राजस्थान के प्रख्यात आयुर्वेदिक चिकित्सक डॉ. नंदलाल तिवारी ने इसे साबित कर दिखाया है।

उन्होंने असाम, दार्जिलिंग व महाराष्ट्र में लगातार १८ वर्षों तक वनस्पतियों पर अनुसंधान कर "कर्कटोल" नामक यौगिक ईजाद किया है। ८ (आठ) आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों के इस मिश्रण से वे मौत की ओर बढ़ रहे कई कैंसर रोगियों को नई जिन्दगी देने में सफल हुए हैं। पर उनकी इस चमत्कारिक सफलता का केन्द्र व राज्य सरकार ने कोई नोटिस नहीं लिया है। वे "घर का जोगी जोगणा, आन गांव का सिद्ध" साबित हो रहे हैं। अपने देश और राज्य में उनकी उपेक्षा हो रही है। पर विदेशों में उनकी पूछ बढ़ती जा रही है। डॉ. तिवारी द्वारा तैयार यौगिक खासकर गर्भाश्य, स्तन, यकृत, प्रोस्टेट, हड्डी, भोजननली व रक्त के कैंसर के इलाज में काफी असरदार साबित हुआ है। अन्य प्रकार के कैंसर में भी इसके अच्छे नतीजे सामने आए हैं। सिर्फ एसाइटिस कैंसर में यह बेअसर सिद्ध हुआ है। खास बात यह है कि कैंसर की अंतिम अवस्था में भी कई मरणासन्न रोगी इस दवा से ठीक हुए हैं। महाराष्ट्र से राजस्थान लौट कर यहां मालवीय नगर में अपने घर में कैंसर पीड़ितों को जीवनदान दे रहे ६० वर्षीय डॉ. तिवारी बीते २० सालों में सैकड़ों रोगियों को कैंसर से निजात दिला चुके हैं। उन्हें मिली इस करिश्माई कामयाबी पर सहसा भरोसा नहीं होता। पर रोग मुक्त हुए लोग और उनकी जांच रपटें इसकी पुष्टि करती हैं। नाम व दाम की लालसा न होने और प्रचार से दूर रहने के कारण डॉ. तिवारी अभी तक अपने गृह राज्य में ही लगभग अनजान बने हुए हैं। दूसरे राज्यों में उनकी ख्याति मुंह से मुंह फैली है। सो उनके पास राजस्थान से ज्यादा मरीज महाराष्ट्र, बंगाल, बिहार, उत्तरप्रदेश, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, केरल, कर्नाटक, गुजरात, हिमाचल, हरियाणा, दिल्ली, मध्यप्रदेश, पंजाब आदि राज्यों से आते हैं। राजस्थान के इस गुदड़ी के लाल की ख्याति देश की सीमाएं भी पार कर चुकी हैं। अमेरिका, जापान, कनाडा, फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया, स्वीडन, स्विट्जरलैंड, पाकिस्तान, दुबई, बहरीन, दक्षिणी अफ्रीका आदि देशों के कैंसर पीड़ित तो ने यहां आकर डॉ. तिवारी की दवा "कर्कटोल" से फायदा उठाया है। अमेरिका व ब्रिटेन के कुछ प्रतिष्ठित चिकित्सा संस्थानों ने भी डॉ. तिवारी को मरीज "रैफर" किए हैं। इनमें दुनियां का पहला कैंसर अस्पताल राट व मार्सडेन हास्पिटल लंदन, चिल्ड्रन्स हॉस्पिटल केलीफोर्निया, दर्ड गल्स क्लिफ मेडिकल प्रेक्टिस कर कनीनलैण्ड और सेंट थॉमस हॉस्पिटल लंदन शामिल हैं। थॉमस हॉस्पिटल से एक आर.सी.एस. की डिग्री लेने में भारतीय डॉक्टर गौरव मानते हैं। कैंसर उपचार में डॉ. तिवारी की उपलब्धियों से प्रभावित होकर लंदन की एक सामाजिक संस्था ने उनके काम पर फिल्म बनाई है। ब्रिटेन के एशिया टीवी ने उनका आधे घण्टे का इन्टरव्यू प्रसारित किया है। इंग्लैण्ड, जर्मनी, बेल्जियम, दक्षिण अफ्रीका, केन्या, सिंगापुर जैसे अनेक देशों में उन्हें उपचार के लिए बुलाया जा चुका है। देश के सबसे बड़े कैंसर उपचार केन्द्र टाटा मेमोरियल कैंसर अस्पताल, मुम्बई व कुछ अन्य भारतीय अस्पतालों के डॉक्टरों ने भी डॉ. तिवारी के पास असाध्य कैंसर रोगी भेजे हैं। इनमें से देश-विदेश के कई मरीज "कर्कटोल" से ठीक हुए हैं। टाटा कैंसर अस्पताल के एक कैंसर ग्रस्त डॉक्टर को भी इलाज के लिए यहां भेजा जा चुका है। डॉ. तिवारी अपनी दवा से सभी मरीजों के ठीक होने का दावा नहीं करते। उन्होंने बताया कि उनके पास ज्यादातर (९० फीसदी) मरीज ऐसे आते हैं जिन्हें हर तरह के लम्बे व खर्चीले इलाज के बाद अस्पतालों से जवाब दे दिया जाता है। इन रोगियों को डॉक्टर यह कहकर घर लौटा देते हैं कि वे अब भगवान को याद करें। कैंसर की अंतिम अवस्था वाले ये रोगी मौत के काफी करीब पहुंच चुके होते हैं। फिर भी उनमें से दस से तीस फीसदी मरीजों को उनकी दवा से सौ फीसदी और तीस से पैंतालीस फीसदी रोगियों को काफी लाभ मिला है। अंतिम अवस्था के कैंसर में उच्चतम एलोपैथिक चिकित्सा से ५ से १० फीसदी मरीजों को ही लाभ हो पाता है। ऐसे में डॉ. तिवारी की सफलता का आंकड़ा बहुत मायने रखता है। कैंसर की दूसरी अवस्था (सैकड-स्टेज) वाले रोगियों में अपनी सफलता की दर ४५ से ५० फीसदी बताते हुए वे दावा करते हैं कि उनकी दवा प्रारम्भिक अवस्था वाले ज्यादातर (८० फीसदी) मरीजों को पूरी तरह चंगा करने की कुव्वत रखती है। देश-विदेश की प्रयोगशालाओं में किए गए परीक्षणों में यह दवा मानव शरीर के लिए निरापद (निर्दोष, दुष्प्रभाव रहित) पाई गई है। इन परीक्षणों की रपटी के साथ डॉ. तिवारी के पास देश-परदेश के मरीजों की जांच रपटें भी मौजूद हैं। उनमें ऐसी रपटें शामिल हैं जिनमें जिन प्रयोगशालाओं ने जिन मरीजों में कैंसर होना प्रमाणित किया था, उन्हीं प्रयोगशालाओं ने डॉ. तिवारी के इलाज के बाद जांचकर उन्हीं मरीजों में कैंसर का प्रभाव शून्य (निल) बताया है। १९७९ से कैंसर का इलाज कर रहे डॉ. तिवारी ठीक हो चुके कई मरीजों का रिकॉर्ड जला चुके हैं क्योंकि उनके पास उसे रखने की जगह नहीं है। १९८५ से ९० तक के रिकॉर्ड के आधार पर जुटाए उनके आंकड़े बताते हैं कि इस अरसे में उन्होंने १९७७ रोगियों का इलाज किया। उनमें भोजन नली के कैंसर के ४२९, स्तन कैंसर के २०८, गर्भाश्य कैंसर के १७८ व ब्लड कैंसर के १६२ रोगी थे। भोजननली के कैंसर रोगियों में से २८ फीसदी को सौ फीसदी फायदा हुआ। २७ फीसदी को काफी लाभ मिला जबकि ४५ फीसदी को फायदा हुआ। गर्भाश्य के कैंसर के १५ फीसदी मरीजों को सौ फीसदी व ४२ फीसदी को बहुत फायदा पहुंचा। इसी तरह रक्त कैंसर के रोगियों में से १३ फीसदी पूरी तरह ठीक हो गए, ३५ फीसदी को काफी आराम मिला। ९१ से ९९ तक के आंकड़ों को वे अभी तालिकाबद्ध नहीं कर पाए हैं।

डॉ. तिवारी के पास मौजूद मरीजों के ब्यौरे व प्रयोगशाला जांच रपटों से पता चलता है कि उज्जैन की उत्तमराव बाई (६०) में बच्चेदानी का कैंसर अवस्था में पहुंच चुका था। वे ४ माह तक डॉ. तिवारी की दवा "कर्कटोल" का सेवन कर पूरी तरह रोगमुक्त हो गई।

लाईलाज बीमारीयों के लिए अंतिम शस्त्र के रूप में लोग आयुर्वेद का सहारा लेते हैं जबकी होना यह चाहीए की अस्वस्था के लक्षण दिखते ही आयुर्वेद को अपनाना चाहीए क्यों की भारतीय संस्कृती, परंपरा ने ही सपूर्ण विश्व का मार्गदर्शन हर स्तर पर किया है जिसमे आरोग्य को संपत्ती का दर्जा दिया गया है।

आयुर्वेद में भयंकर से भयंकर बीमारीयों का ईलाज करने कि क्षमता है और यह हमारा सौभाग्य है की ऐसी बीमारीयों के इलाज मे आवश्यक जड़ी बूटियों के संसादन भी भारत की धरा पर अवश्यक मात्रा मे मौजूद है।

भारत के कई सपूत निस्वार्थ भावसे लाईलाज बीमारीयों के इलाज करने मे जुटे है जिसमे हैदराबाद नगर के संतान बी है जिसमे हड्डी रोग के लिए डॉ. कादरी तो, दमा के लिए गौड बधूओ के द्वारा दिजानेवाली मछली की दवाने तो विश्वभर में भारत का नाम मशहूर किया है। इसी श्रृंखला में कैंसर जैसी भयंकर बीमारीका इलाज आयुर्वेद पध्दतीसे करने का बीडा उठाकर विगत २० वर्षों से अपने कार्य मे अग्रसर है भारत के एक और संतान जो की राजस्थान गुर्जरगौड, ब्राह्मण है डॉ. नंदलाल तिवारी

इनके द्वारा निर्मित 'कर्कटोल' आठ जड़ी बूटीयो का आयुर्वेदीय मिश्रण है। जिसके सेवन से देश के हि नही तो विदेशो के मरीज भी लाभान्वित हो रहे है और इस मिश्रण को लंदन की संस्था और कई देशी विदेशी चिकित्सको ने प्रमाणित किया है।

संपर्क पता :
Dr. Nandlal Tiwari
2/13, Malveeya Nagar,
JAIPUR - 302 017
Rajasthan,
India
ph: 0141 521385